

गंगमस्नानरुल्लसदं। विष्णुना नक्तमागुने नृदय धनायम ॥८॥ त्वहो नव
दस्कन्दोऽन्यागं गंगारुसमरुवायनस्वर्गनेत्रमिन्द्रासहिमानं महामने
॥९॥ स्फुटउवांच॥ सनियुध्य जलानीरुसत्रांसि सत्रिनामनः स्नाने स्नान
चतीर्थमिति जिनात्मा धर्मिणानि च ॥१०॥ दृष्टेयत्येकात्राधि महामहिम
रांजिच। यत्र स्वर्गनेत्रे जिन्त्याकाशं ॥११॥ गंगविनगगुवा ॥१२॥ जननेवा

नूमाननवद्वयस्वकलः ॥१३॥ रुद। द। धुगर्भहमा (गवैदवदवनशंजुमाः
॥१४॥ स्नानकालेऽन्यनी (धर्मिणोऽग्रजोऽक्रवीजलः। विना विष्णुपदीकान्य
समर्थमध्वरेष ॥१५॥ ॥१६॥ गंगमस्नानरुल्लसदं गंगया भवले स्यता। यथा
डाकारुल्लखादाडाकाया भवना न्यन ॥१७॥ ॥१८॥ श्रुत्याय नृदले के स्याद
नाविलहंल स्नानस्य दत्त निगमलं कृतमामून ॥१९॥ शिवरुकाय

॥१३॥

ॐ नमो विष्णु किय ना य न। शुभाल वस्त्रा सि काय गृह वास मम द्रव
॥१२॥ कथनीय नयाना स्य कस्य विष्णु कने चिक विन्। ॐ द न ह स्य व न म न
हायान काना गनां। महो। ॐ यस्तु नयू ध्यं मना ने थे क न य न। य न दी यी
निजन कं गिव स नो ष स न नि॥१४॥ नाम्ना सह मुग मी सुवना जय गभरुन
जयाना य न म जय व दाय निषदा सनी॥१५॥ यिजे नी य प्रज त न मो नि नो

यां ३

वसु कं विना। ॐ विस्व नय ॐ विना सु स्य का द न भव च॥१६॥ सु द उ वा च॥
ॐ कान नू यि न्य ज नो तुलान का म न शुवा ज ल द नारु या ॐ काल क
न दामृ गाम ला॥१७॥ जनाथ व सभा द्या या या नि न मृ ग व द। ॐ य क लु ड
ॐ द्या न व चि न्ना इ व ना जि नो॥१८॥ जनाथ व स नो थ रि द्या य सि
दि दान न ग व दि नि। ॐ मि मा दि शु नो धा ना ग गृ ध्य म ती क ह नो मी॥१९॥

अविद्यमसकि न न वाहु न न वाध हा विभी । अदि नाजसु ना हांग याग
सिद्धि प्रदा युगा ॥ २० ॥ अज्ञे के ग कि न सदा इन न नी थ इ मृ ना द को । अ
न न म हि मा या जा इन न सो र य प्र दान द ॥ २१ ॥ अ (अ) व द व ना मू लि ज धा ३
ना मृ न नू वि भी । अ वि या ज त स म नी अ य न क ग ति प्र दा ॥ २२ ॥ अ (अ) व
वि द्य स रू गी ख (अ) व गु हा गु पि ना । अ ज्ञान ति मि या कि न नू ग द न य ॥ २३ ॥
ग १ १ व १

उक्ता व सा ल सा कं ला उ प न्द य न हा प्र वा ॥ २० ॥ उ उ न व मू लि रु गु (अ) व ३
दा या सा रु प्र व दि नी उ द ग घा वृ हा म नी अ वृ न जि स ना वि या ॥ २१ ॥ उ उ
हि छि ति स रू न का वि मृ य वि या ॥ २२ ॥ उ उ म रू नू रू व ना ज्ञा व नी चा मि मा ति
नी ॥ २३ ॥ उ उ न न १ प्रिया द्वा द्वा अ मि ला द्वा ग कि प्र दा । अ वि वृ न्द मृ न दि
अ अ ग य वी ना शि नी ॥ २४ ॥ अ न रू न दि दा गी व अ के नू या अ रू वि या ३

कृष्णनूतनयनश्च निःकनूष्णदासकल्याणी कलिकलमवना शिनी ॥४२॥ का
मचूया क्रिया शक्तिः कसला लमालिनी ॥ कृष्णकनूष्णकाना कसमया
ना कलावणी ॥४३॥ केमला कल्याणिका कासी कलषवे निशी कस
नीयजला कमा कपदिसूषयद्द्वयम् ॥४४॥ कालकृष्णवहामनी कदम्ब
कसूमयिया ॥ कालिन्दे कलिलिका कलकेशी लमालिका ॥४५॥

७

कांगला कण्ठया कदु कदुतनयकसला ॥ खगिनी खगैधना खग
ख (गुन्दु धा विधी ॥४६॥ खरेखलगमिनी खस्करव (गुन्दु निलकयिया ॥
खेचनी खेचनीव न्याख्या निखा निप्रदायिनी ॥४७॥ खगिनी युगाद्योद्यो
खलवृद्धि विना शिनी ॥ खगनेन कन्दसुन्दारा खगैरवकाश खगिनी ॥४८॥
खनेसनायगमनी खनिः वीयूषया यमोगै गैवती (गैजी गवधनगः

जयिया ॥ ४४ ॥ मंही जांगी गुहमयी गनटं कागतिप्रिया ॥ गगनाथं विक
 गीता गद्यपद्य विवृता ॥ ४५ ॥ गगन्य जीगरुव गमनी गतिरुद्विगतिप्रदा ॥
 गगमती गुह विद्या गौ ॥ ४६ ॥ गगमीनी ॥ ४७ ॥ गगन्य वद्विनी गुह्य
 गुहमीता गुहमी ॥ ४८ ॥ गुह्य विद्या गगमीनी ॥ ४९ ॥ गुह्य विद्या गगमीनी ॥ ५० ॥ गुह्य
 नीयच विद्या गगमीनी ॥ ५१ ॥ गुह्य विद्या गगमीनी ॥ ५२ ॥ गुह्य विद्या गगमीनी ॥ ५३ ॥

५२

॥५३॥ ग्रहणी ठा रुजा गुह्यु रा रुघ्नी गमनसला धम्मो रुनी दृनवती घनपु
 सिपु दायिनी ॥५४॥ धम्मो नव पि धा ना धो घ वि ध सको जिनी धा भगु सि
 कनी धा वा घना न दायन पि यी ॥५५॥ सा गु का घु धि न जला घु ध्या न
 क सं न गि घ ठ का टि पु यी ना या घ गिता धा ध म नी ला ॥५६॥ घु ध्म व नी घु
 धि नि धि धा ध्म ना घु क ध्म दि नी ॥ घु ध्म धि विं ज न नू घ धि जी घ धि य ल

ना॥५५॥चदि काच नु कानावृत्त॥यादाचलद्युति॥विन्मयी विनि नूया
चरुद्रायुत शुभानना॥५६॥सम्ययलाच नाचा नृ॥सर्व जीवा नृगमिनी
वायावा विगुनिलया विगुक्त विगु नूयि मी॥५७॥विम्वच नुते शुभयवृक्ष ६
वनीया विनुस्मि नाचा नृच मयक मासाद्याच मि लोनायदू कृता॥५८॥विदा
काशव हा चिन्माच ॥५९॥मनवी जिना वा विना नक वृ जिनाच वि

॥५९॥२
ना॥५९॥म सुला॥६०॥दिना खिरपादो द्या द्यु म द्या द्यु लक्ष विनी॥द्व
न्रवि वि कय नला द्या द्या दिना॥६१॥व न्ध ना द्यु निता मृग म नो द्या द्यु नि
ना द्यु न्द गम मिनी॥द्व नि क न म लो लो द्या द्यु ठि क न निजा मृगो॥६२॥
जा द्यु वी जा द्यु ग न्मा ना ज द्या ज द्या ल वी चिका ज या ज ना द्यु न यी ना द्यु वनी
या ज ग दिना॥६३॥जीव न जी न प्रा म ज ग द्यु द्या ज ग न्मयी॥जीव जी वी पुन

मिकाइमिजन्मनिवर्दिनी ॥५४॥ जाग्रतिविधिसनकनीजगत्तुनिजला ॥३॥
जगदानन्दजननीजलज्जलज्जल ॥५५॥ जिनसावनयीयुवाजठान
ठविहानिनी ॥ जयनीजंजयज्जयनीजनिगहनविद्युदा ॥५६॥ सप्तमीवाद्य त
केशसासलसासाजावृणा ॥ मिष्टीवधवन्द्यासाकीयकाविभीमज्जना
वति ॥५७॥ ठीकिनाखिलयागला ॥ ठीकि केनादियाठन ॥ ठीकालनृयक

सालाहीकनीयमदानठा ॥५८॥ उन्नतयवलाजीन ॥ नाजदंशकला क
ला ॥ उमंउममज्जलसावठाम ॥ नाकमदानका ॥५९॥ ठीकि का ॥ ठीविनि
वा ॥ ठीकि नादेवसज्जला ॥ इष्टिविद्येशजननी ॥ ठलदुलितयागका
॥६०॥ नयनीतीथनीथचनियेथ ॥ निदवधनी ॥ ठीला के ॥ ठीयागायसी
॥ ठीलाकयविवन्दिता ॥६१॥ नाय निगयसंरु ॥ ठीलावल विवन्दिनी ॥३॥

जि नक्षत्राणां नभीगान्ना न जायति क जा विना ॥ १२ ॥ ॐ ला कया वनी तु ह्य
 तु द्विदा तु द्वि नू विभी ॥ १३ ॥ ॐ ला कया वनी तु ह्य ॥ १४ ॥ ॐ ला कया वनी तु ह्य
 मयी न यो नू यानुय सामरु प्रदा ॐ ला कया वनी तु ह्य ॥ १५ ॥ ॐ ला कया वनी तु ह्य
 नू विभी ॥ १६ ॥ ॐ ला कया वनी तु ह्य ॥ १७ ॥ ॐ ला कया वनी तु ह्य ॥ १८ ॥ ॐ ला कया वनी तु ह्य
 यदि नू यानुय सामरु प्रदा ॐ ला कया वनी तु ह्य ॥ १९ ॥ ॐ ला कया वनी तु ह्य ॥ २० ॥ ॐ ला कया वनी तु ह्य

न
 प्रागुदाग्रयीस्रुविनौनन्वीयेननामजल्लिति नूत॥१७॥कविस्तत्रमि
 जामिर्गनयिना।शवेयवर्जो।उलाविलहिनानीवपापहलननूयानो॥१८॥
 दाप्रियेदमनिदकादुद्युक्तादियमृष्टुना।दीक्षावलीदलोचाया
 डाकामधूत्रवाविरुते॥१९॥दधितानककुठुकादूयुदजयदुष्वद
 न्।दस्यद्विनिघ्नवदानवात्रियदाकुजो॥२०॥देदेष्टकेविषाधि

चदात्रिणाधोघसक्तनिःशङ्कतादवद्धवैमकुन्नादूर्वात्राद्यविद्यानिनी
॥६०॥ दमग्रामादवमानादवलाकप्रदग्निनी दिवदवप्रियादवदि
कासयददायिनी ॥६१॥ दीघयिकात्रिणीदीघादाग्यीदवभीवज्जिना ॥ ११
दग्धसुवाहिनीदाकादियादिवगनिप्रदा ॥६२॥ अन्नदीदीनशजन
दहिदहिनिवात्रिणीजाघीयसीदागदकुदिन्याककसक्तनि ॥६३॥

द्वजदग्धनजचजीदग्धमादववज्जरादवर्कधीदविगमलादयाधना
दयावती ॥६४॥ दनासदादानशीसाजाविभीहृदिनकुनादेयेदानव
संशुद्धिरुक्तीदवदिदात्रिणी ॥६५॥ दानसात्रादयासात्रायायारुमिविगम
हिनीदेकादयेरुसयाकिदवनावन्दवेदिना ॥६६॥ दीघविनादीघदि
क्षेदीकितायादनासदादधुयिणीदधुनीनिद्रुदधुधजात्रिना ॥६७॥

इत्यादनाद्यादावा विदुर्वदव्येक (अवधिः) दीनसन्तापशमनी दाणीदव
 थुवे निभी ॥ ४५ ॥ दजी विदाय गायना दाना दानकन विद्या दानिनादि
 नदिद्वन्द्वद्वन्द्वनम्यप्रवा निभी ॥ ४६ ॥ धम्मदिवाधम्म धनाधनध्वना
 धनिधुवाधनदानधुवस्यधम्मधम्मकामाधमिद्वन्द्व ॥ ४७ ॥ धम्म
 मिवाहिनीधुयाधुनाधम्मविश्ववर्णाधम्मिणीधम्मणीलाचध

निकाटिकतावन्मा॥२॥ध्महयापहजाध्याभवनीधनकुल
याधम्मधजाधम्मसाजाधनदाधनुवदित्ती॥२२॥धम्मोधम्मठ
भपुणीधुहूजेकसुमयियाधम्महीधम्महामुल्लधनधान्यस
मृद्धिकता॥२३॥धम्मलेयाधम्मजिलाधम्मयसवधम्मिणीध्यान
गम्यस्वयेयाचधनहीधहयूडिना॥२४॥धुहूजेठिजठासिख

धन्या धीर्धनि भावनी । नन्दा निर्वर्त्तननी नन्दिनी नूनया नका
॥८५॥ निर्विद्ध विष्ट निवया निजानन्दयका शिनी । नरो गेष्टजीर
निन्नम्यानायाय धी नृणा ॥८६॥ निर्मला निमलारखाना लालिनीणा १३
यसम्यदा । नियदा नित्यसुखदा लानाश्वयमहा निधि ॥८७॥ नदीः
नदस जा माता नायिका नाके दीपिका । नक्षधेये धायाच नन्दना

नन्ददायिनी ॥८८॥ नित्रिका षष्ठवना निःसंगम निरूपयवा ॥३
निजालम्बा निःप्रयश्च निन्ना शिगमहामणा ॥८९॥ निमलरुणे नूजननी
निःषया शिगायद् ॥ निर्यात्सवा नित्यरुका नमस्काया निजजना ॥
१००॥ ॥८॥ निष्ठावती निजार्थको निलया निश्चयात्मिका ॥ निववशानिः
जीराच नीललाहि नमस्वगता ॥१०१॥ नन्दिरु गिगहम्बुल्या नागमनन्दा

नगम लमडा ॥ निःपु लुका नाकनदा ॥ निःपुया ध्रुव दीघनी ॥ १०२ ॥
पुष्प युदा पुष्पग रुयि ध्रुव ध्रुव न निष्ठा ॥ पथः पथः रुलाय ध्रुव युष्प
गानि युष्प रुजिनी ॥ १०३ ॥ पुनदाया गिजननी पुनदाया गिजननी ॥ पुनदाया गिजननी ॥ १०४ ॥
यनाग किः पुनजिने यनम प्रिया ॥ १०५ ॥ यनाय नरु लया किः याव नीच यय
हिनी ॥ यना नदा पुनि धा था पु निष्ठा पालनी यना ॥ १०६ ॥ पुना गाय ठिगायी

गायु म वा क न न र वि धी ॥ याव नी पुम सं य नाय पु या म वि या गिनी ॥ १०७ ॥
याय न मा त्मा स्त नूपा च य न उ क्त यु का शि का ॥ य न मा न न द निष्ठा या यः
धि रु स्त नू वि धी ॥ १०८ ॥ या नी य नू य निष्ठा धी य निष्ठा धी य नाय धी ॥ या य
न न द व को ला या या वि ष या य नो म नू ॥ १०९ ॥ य न म ध्व य ज न नी पु रु षा
शाय नाय ना ॥ पु क्ते य ल जी ष य ना की य न यो मा ष म न मु वा ॥ ११० ॥ पु स न नू या य

निधिः पूनायुक्तवना॥ विना किय नमयीना य नमश्चिकमहा ल॥ ११०॥ य
दना रुयदा धर्म प्रसगाय दामां लिनी॥ य नदिदा य चिकनी यथा य हि
यव रोनी॥ १११॥ य नाना यीन गरु घी या य य वन या न नी॥ रु लिनी रु लद
सा च रु ला म्बु ज विला च ना॥ ११२॥ रु लिने नाम रु द्वा रु नि ला के वि
रु व नी॥ रु ल क्ल ल य नू नै ना ४ रु ल के न व ग न्धिनी॥ ११३॥ रु नि ला क्का

मू धा ना रु रु द्वा ठिन या न का॥ रु गिन खा दू स लि ला रु डु य थ ड ला वि
ला॥ ११४॥ वि ष्वे मा ना च वि (४४) वि ष्व वि (४४) न प्रिया॥ व द्वा थ व द्वा क
द्रा प्नी व कि षा वि म ला द क॥ ११५॥ वि रा व नी च वि न जा वि का ना न क वि
ष्या॥ वि षु मि न वि षु य दा व षु वी व षु व प्रिया॥ ११६॥ वि नू या क प्रिय क
नी वि रु ति वि ष्व ना मे र्वी॥ वि या ष्व वे व्धी व द्या व दा क न स स वा॥ ११७॥

विश्रावदवनी वन्द्या व हि णी ब्रह्म वा दि णी ॥ वज्रदा विप्रकृष्टा च व निः
काच विष्णु धनी ॥ ११७ ॥ विश्राधनी विष्णु काच वया वन्द निध निता ॥ वः
दूद का वलवनी व्यामस्मा विवृधयिया ॥ ११८ ॥ वा णी वद व नि कि ला व
के विश्रा न न नि णी ॥ वक्ता मुको टि व्याफा व वृक्ष रु स्या व हा नि णी ॥ ११९ ॥
वृक्ष ग विष्णु याच वृद्धि विरुव व छिनी ॥ विलासि सखे दा व ष्म व्या वि णी ॥

१५
१६

चट्वा न णी ॥ १२० ॥ वृषा क्रमो सि नि लया विपन्ना लिपु रं जिनी ॥ विनीताः
वेन नावृक्ष न या विनया चिना ॥ १२१ ॥ विप क्रि वा य कृष्ण ला व ग ष्ठ
निविच कृष्ण ॥ वृक्ष जीव न क नी वृक्षान्मू लिन कृष्ण ॥ १२२ ॥ विप
प्रा विन ना न का विकल्प य चि व जिनी ॥ वृक्षि कली वृक्ष जला विभि
विच्छिन्न व च नो ॥ १२३ ॥ वृक्ष न्या वृ हि न्या वृक्ष विघ्न विगं कृत् ॥

११३॥ मृनि सुता भारु रु कु म हा नी अ म धु शु वा ॥ मा ध वी मा नि नी न्यौ मो म
ना न थ य थ नि ग ॥ १३२ ॥ मा द द म नि दा म र खा म हा रा ग्य ज न धि
ना ॥ म हा व ग व नी म ध्वा म हा म हि म रु व ण ॥ १३३ ॥ म हा य रा वा म १७
रु नी सी न च ऋ ल ला च ना ॥ म हा का नू ध्य स यू ध्म मे रु दि ष्य म हा
त्य ला ॥ १३४ ॥ मृ लि म नू कि न म णा म णि मा णि के रु व ण ॥ मृ का

क ला य नू य थ्वा म ना न य न न दि नी ॥ १३५ ॥ म हा या न क लो णि धी म
हा द वा रु हा वि णा ॥ म हा मि मा लि नी मृ का म हा द वी म ना म नी ॥ १३६
॥ म हा य (ध्वा द या या का मा या नि मि न च दि को ॥ म हा वि या म हा मा
या म हा म ध्वा म हा व ध्वा ॥ १३७ ॥ मा ला ध नी म हा या या म हा ज ग वि रु व
ण ॥ म हा मा रु य ण म नी म हा म म ल म ण री ॥ १३८ ॥ मा रु णु म णु ल

वनीमललक्ष्मिमाजिता॥यमसिनीय॥१४०॥दावथाग्नायूकोत्तमविना॥१४१॥
॥यागसिद्धिप्रदायाश्चायूरुणीयूरुदुलदा॥यजनीयायथास्कवीयमिः
सवायागयानि॥१४०॥यागिनीयूकवृद्धिदायागस्तनप्रदायूको॥जमाय १४
कोमीयागयूकयन्तिनाद्योषसः॥१४१॥यमलाकनिवाविहीयागाया
नप्रशमनी॥याननानामरुक्नीयामीनीमहिमादा॥१४२॥यूगध

मविजिता॥वनीयत्रिकुडम्या॥नसगरुत्रमावनि॥नलाकत्रयमयाणं
॥१४३॥नसस्तनसत्रयिणी॥नलप्रसादगुरुव॥नमहीयनत्रंगिणी॥नला
वृद्धजमेणी॥१४४॥जागद्वेषविनाशिनी॥नमात्रामात्रम्यत्रया॥ना
मिजीवानुत्रयिणी॥नचिकुडावनीत्रया॥१४५॥नृत्तिनात्रागहनिही
त्राजहसात्रववनी॥त्राजकस्तननाजिता॥नामगीयकत्रवाव॥१४६॥३

नृणां नीलाग नृपिणी, जाका जंका हिंमनी ॥ नम्या जालमवा विभी, ना
निभी नं जिम शिवा ॥ १४० ॥ नृप लाव ध्य (शिव धि, ला क पु म् ली क व न्द्रा ॥ ला
ल क् लाल मा लिनी ली ला व नी लि र्मि ॥ १४१ ॥ ला क ला व ने च न्द्रिका, ल र व २०
शु व नि ल ठ रि ॥ ल घू व ग म ल घू ल व क्त, ला म्प ह न ग रु स्ता व ल लि ना ल य र्
मि म् ॥ १४२ ॥ ला क व न्द्र ला क ध्म नि ला का रु ज म् (ध्म जि ना ॥ ला क पु य हि ना

ला का ल (क्षी ल क् श न कि ना ॥ १४३ ॥ ली ला ल कि नि व धि ला व ध्म म् न ३
व वि धी ॥ व ध्म न नी वा स व आ त न्ध ल य द नि धी ॥ १४४ ॥ वा स द वा धि न
ध्म धी, वा ज व र्ज नि वा सि नी ॥ १४५ ॥ वा व नि १३ रु म् ला ध्म नि ध्म क नू व ल
रा ॥ १४६ ॥ १४ लि नी (ध्म श व व या, १४७ न ला म् वा हि धी ॥ (ध्म रा व नि धी
ल व नी (ध्म धि ना (ध्म धि लि वा ॥ १४८ ॥ श न ध्म शि व दा शि वा श न ज

मयसुः शिवा ॥ शक्तिः शम्भु के विमला शमनस्वरु शम्भुना ॥ १५४ ॥ श
मागमने माग्न्यी शितिक ० म हा प्रिया ॥ शुचिः शुचिकजी शुद्धी (श) वध
यिव दारुय ॥ १५५ ॥ श्रीनिवासा हुरि शम्भु श्रीमती श्री हुरुवना ॥ शुद्ध वि २१
आ शु रावल् शतानन्द हुरि सुति ॥ १५६ ॥ शिवन नद्यी शवजी शम्भुजी श
शिक्षा निधी ॥ शम्भुन (श) धनी शम्भुना शम्भुन धुति दूना ॥ १५७ ॥ श्री सिनी श

लक्ष्मराद्या शिविवाहन गरुड ॥ शंसनी याच विगाच शं निना (श) वसा न का
॥ १५८ ॥ वहु (श) श्वय्य सम्यन्ना वउ गै हुरि न विधी ॥ वहुना ल वि स तिला क्का
यन्नन्दन दी शना ॥ १५९ ॥ स विद नाव सुन मा सुपु रा सु जदी वि का ॥ स्वः सिद्धः
सर्वद श्व द्यी सर्व व्या धिम होष धी ॥ १६० ॥ सुवा सिद्धिः सेनी सु किः सुन्द सु ध्व
सजस्वनी ॥ सिम्य रु न मि शी सु व्या सु शम्भु लि के ना म्य दा ॥ १६१ ॥ ह्य द्य दा सु

रुगमोरवास्त्रीयसो राग्यदायिनी॥सर्वनिःशुद्धिकासुखासुखासुखासु
 भाजला॥१७३॥सुदंभयुज्जीसुख्यसर्वयानकर्वेत्रिभी॥सुनाघेरात्रिभीसी
 नाससोनादिनत्रिभिः॥१७३॥सोराग्यसुन्दरीसुभ्यासर्वसात्रसमन्विता॥ २२
 हत्रयियादुषीकशीरुसन्त्यादिनभयी॥१७४॥दुगाघेसंघादिनरुद्र
 लाहलाघगरुद्र॥दुकाद्विप्रदाहार्द्रकात्रादयंदगमा॥१७५॥दि

माचलसुगादमीद्विविकशयदाहवा॥दुम्याकाकिःदुमाधनादिनिरुवा
 द्विमिश्रिता॥१७६॥दुमदाकासिनाघाचद्रुद्रविदाविनीकम्पा॥३॥नम॥॥
 नामसुदुमुदिगंभयाःकलःभरुवाकीकयित्वानत्रःमासुज्जुगमस्तानदु
 रुलंलुरु॥१७७॥सर्वयायप्रथमनसर्वविघ्नाशनं॥सर्वसात्रजया
 कुष्ठसर्वयोवनयावनं॥१७८॥शुद्धयाशीलुरुलदचउवज्जर्मसेदि

कृत् ॥ सकृज्जयादवाप्राति अकृज्जुरुलंमून ॥ १७२ ॥ सर्वतीर्थेषु य
ज्ञानं सर्वयज्ञेषु दीक्षितं ॥ न स्यात्तुल्यं मुदिष्टं विकालय ० नाचन
न ॥ १७० ॥ सर्ववृत्तवैयत्यर्थं समाकृत्वा ॥ धूम्रवानवा ॥ न तुल्यं समवाप्रा २३
नि ॥ विसृज्य निर्येन ० न ॥ १७१ ॥ ज्ञानकोलय ० अस्तु यज्ञकृत्
लाभय ॥ नृसंनिहितान् नारां गमयिष्यथ गमून ॥ १७२ ॥ श्रिया वि

लरुन ॥ श्रिया धनार्थं लरुन धनं ॥ कामी कामानवाप्राती भाक्षाभा
कमायया ॥ १७३ ॥ वर्षे विकालजयनात् श्रद्धया श्रुतिमानस ॥ अथुका
लाहि गेमनादयज्ञं यज्ञं वारुवत् ॥ १७४ ॥ नाकालमनघं न स्यात्ना
मित्रीलाहिसाधसं ॥ नान्नासुहृदं गमयात् यज्ञं यज्ञं याम्ना ॥ १७
॥ गंगं नाम सहस्रं नुज्जयात् गमनात् यज्ञं यज्ञं ॥ कार्यसिद्धिमवाप्नाति

निर्विघ्ना गुरुमा विष्णु ॥ १०७ ॥ तिथि वा जह या गमनां न दाष ४ य ह वह
दा ॥ यदि ज ह्या वृज दत्त गे सा गुं गु मा न न न न ॥ १०८ ॥ अथ ना ना ग्य जन
नं सर्व विद विनाशनं ॥ सर्व सिद्धि क नृ प सां गं गम नाम स सुदे कं ॥ १०९ ॥ २४
ज न्मा न न स रु सुष स त्या यं सम्य गम जि ती ॥ गं गम नाम स रु सु स्य ज य ना
रु द्र यं वृज न् ॥ ११० ॥ वृक्ष धाम य प ४ स्व भू सि यी य गु न न त्य ग ॥ सु त्सं

या गी कृ ण ह ना सा रु हा पि रु हा म न ॥ वि ष्म सं घा टि ग न द ४ कृ त ध्या मि त्थ या ॥
न क अ नि दा गं व ध क र ॥ १११ ॥ उ उ वा य ह न क ॥ ११२ ॥ स हा या न क य
का पि सं यु क्ता य य या न क मे च न गृ ह्ण या ज ह्या गं गम नाम स रु सु क ॥
११३ ॥ श्री धि वा धि य त्रि कृ को धो न ना य त्रि ति यु ते म च न गृ ह्ण यां स व ॥
३४ खे र्यं रु व स्या स्या नू कि ॥ ११४ ॥ स म्ब ल न ग य को त्मा य ० नू किय

पनाय ३॥ ७॥ रू ली विनां ल रु ति दिं सर्व वा येः पु म् चान् ॥ १६१ ॥ सं ग या वि
सु वि रु सा ध म्म वि द वि (भा यि व ॥ दो रि क स्या पि हिं मु स्य च ना ध म्म ये
ज रु व न् ॥ १६२ ॥ व ध्मं शु म य धी न रु को म क्रो ध वि व डि ॥ ये रु लं ल रु २१
न रु नी ने दा प्रा स्य स्या की ल ना न् ॥ १६३ ॥ ग म य गु य न या ॥ ० न य ल्प ध्म
स म्प या जि नं ॥ स रु न् य ० न न ॥ स म्प कू न द (श व म वो प्र या ॥ १६४ ॥ ग

न द्वा व द वि द् व य ल्प ध्मं ल रु न रु नी ॥ न ल्प ध्मं स म्प ग म र्वा नं ल रु व ना ज
स रु ज या न् ॥ १६५ ॥ गु न् ३ शु र्प नं क र्ब न् या वे ऊ र्ब न ना न म् ॥ ये ल्प ध्म स
ऊ य रु क्ता व र्प नि ष व नं य र्थ ॥ १६६ ॥ वे द या ना य ध्म न् य ध्मं य द गु य
पि य ध्म न् ॥ न ल्प ध्म स न ल रु न् वि स ध्मं य नि की ल ना न् ॥ १६७ ॥ गं ग मः
या रु नां वे ऊ स्य पु ल्प रु य नि शी ल ना न् ॥ शि व रु कि म वो प्रा नि वि ष रु

काथवा रुवेतु ॥ १६१ ॥ यः कीलं यदनु दिनं गंगानाम सरु सुक ॥ नत्स
मीय सरु च जी गंग दवी सदा रुवेतु ॥ १६२ ॥ सर्वप्रिय श्री रुव निः स
वप्रविज्ज यी रुवेतु ॥ सर्वप्र सुख माया निजा इवी लागुया ० न ॥ १६३ ॥ १६
सदा वा जी स विरुये ॥ स ३ विरु स देव हि ॥ न स ध सु ना च ॥ सु कील
यय ० मां सु नि ॥ १६४ ॥ य मिरु फ रुव रु का जा इवी ना ग सं ग य ॥

नत्सा सर्वप्रय लन गंग रु कं न म च य ॥ १६५ ॥ सुव ना ज मि दं
गंग ॥ १६५ ॥ सुया य ० व वे व ० न ॥ ध्रुव य ड थ ने रु का न रु ला रु वि व
जि न ॥ १६६ ॥ म च ने वि वि (वे या ये म ना वा का य स रु वे ॥ इ म नि
षा य ना म नि वि रु ० म ॥ प्रिय रु वेतु ॥ १६७ ॥ सर्व देव प्रिय ० वा पि
सर्व देव वि स म न ॥ ० रु वि मा न मा ने रु दि वा मी ग न स रु ॥ १६८

६॥ दिव्यारुणसंयन्त्रादिव्यरागसमन्विता नन्दनादिवने
सुन्दरववनसयुमादना ॥ १७८ ॥ ऊर्मो नवविप्रवृष्टाधकाल
विशेषतः ॥ उयन्निदं महासागुं विहृष्टं हृदयिका नृके ॥ १७९ ॥ यो २१
वकिन्नसिकानियावकोम्वनोऽस्मिन्ना ॥ नावन्ववहिवयागिमा
दन्तस्वयिनामहा ॥ १८० ॥ यथाप्रीतिर्यिनार्गभयापिमुदान

नशान्तेवहृदयः ॥ अङ्गुलवस्यास्यचसंश्रुयान् ॥ १८१ ॥ पुनस्तान्
हृदयस्य लिखितं पत्रियुञ्जत ॥ तन्वायपरुयं नोस्मिन्नुबिन्नुवन्
सदा ॥ १८२ ॥ अङ्गुलं किंवेदुं कुन ॥ अङ्गुलमनिष्ठितं वेत्तु ॥ अङ्गुलीना
नुकलकव्यं ॥ सदिग्धं विरलनदि ॥ १८३ ॥ यावन्निमेषस्तान्नागि
मनुजालान्यङ्गुलान् ॥ नावन्निमेषाङ्गुलीनामसमानिन ॥ १८४

॥ यावद् नमः यथा सुनामा भनत्सहस्रं सकीकृष्टं यिन्नानां नमः
 पूनरुमा विष्णु ॥ १८६ ॥ नित्यं नियमं को नन शोडयत्तुं नृणां मुहमं
 ॥ अन्यथापि विष्णुनेऽसु गन्तुनी नमृता रुवन् ॥ १८७ ॥ ननत्तां वनः २६
 पूष्णं यथा प्राकं यि किं ना ॥ विष्णुं निड रुकाये मूक वीजा के ना स्यद
 ॥ १८८ ॥ गं गमस्तान पु नि नि मि स्तो गमन भय तिनं ॥ सि स्ता यूजा क

वीनस्मादनृपाकं जयन्सुधीः॥ ॥ ॥ नृनिग्रीकः
 नयन्नाहो कोशीख (मुगं गम सुह मुना मे को न वि से ह मा ध्या य
 ॥ ॥ संव न ६६० का हि के ४३ क न्द्रा दि ए वा न स य मू दि न ॥
 धी ३ वि वृ पि नि ॥ ॥ शु र म सु सु व को ल ॥ या द सं यू स क द द्वा ना
 द सं लि खि नै न या ॥ ज दि शु द्ध म शु द्ध वा म म दा ष न दी य न ॥ शु रु ॥

॥ लिखित नाम नथ सिंह ॥

॥

॥
ASHA ARCHIVES

आशा अरु काथि

९९९

ASHA ARCHIVES

२८